उपसंहार

आधुनिक हिन्दी साहित्य तथा भारतीय इतिहास में 'राष्ट्रीयता', 'राष्ट्रीय नव-चेतना' तथा 'राष्ट्रीय आंदोलन' इत्यादि विषयों पर पहले भी विस्तारपूर्वक लिखा जा चुका है किन्तु उन प्रकाशित ग्रंथों और टंकित शोध प्रबंधों में राष्ट्रीय नवजागरण के विराट् अभियान में हिन्दी पत्रकारिता के संघर्ष, गौरवपूर्ण भूमिका तथा उसकी महत्व-पूर्ण सामग्री को या तो बिल्कुल ही नजरअन्दाज कर दिया गया है, अथवा एक-दो पृष्ठों में प्रख्यात पत्र-पत्रिकाओं का नामोल्लेख मात्र करके अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ ली गयी है। हिन्दी के उन तेजस्वी पत्र और पत्रकारों जिन्होंने राष्ट्रीय-नवचेतना-यज्ञ की अग्नि को निरन्तर प्रज्वलित करने में अपने को हविष बना दिया, जिन्होंने स्वातंत्र्य-संघर्ष को व्यापक जनाधार, संगठित जनमत, आधुनिक चिंतन के नये आयाम दिये तथा जिन्होंने भारतीय भाषा-साहित्य-संस्कृति को राष्ट्रीयता और गत्वरता प्रदान की, उनकी भूमिका एवं संदर्भ-सामग्री को इतिहासकारों एवं अध्येताओं ने साहित्य-सर्जना, शोध और समीक्षा के स्तर पर अपेक्षित महत्व नहीं दिया है, मालूम नहीं इसका कारण अज्ञान रहा है अथवा दृष्टि-भिन्नता।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध के पिछले अध्यायों में हमने इसी संदर्भ में 'रेनेसां काल' (19वीं शती का उत्तरार्द्ध) की हिन्दी पत्रिकाओं की महत्वपूर्ण सामग्री और संदर्भों के माध्यम से समग्र राष्ट्रीय नव-जागरण तथा समस्त क्षेत्रों में स्फुरित नव-चेतना को व्यापक राष्ट्रीय फलक पर प्रामाणिक रूप से विवेचित करने की चेष्टा की है। इस अध्ययन में हमने पत्रकारिता और नवजागरण के अन्तःसम्बन्धों, परस्पर प्रभावों एवं ऐतिहासिक-सांस्कृतिक योगदान को भी रेखांकित किया है।

'नवजागरण' (रेनेसां) की एक नहीं, अनेक अवधारणाएँ एवं छवियाँ प्रचलित रही हैं जो इसको गहन चरित्र प्रदान करती हैं। ये अवधारणाएं युगपरक, प्रवृत्तिपरक, बहुआयामी एवं सार्वभौम रही है। यूरोप में ऐतिहासिक काल के रूप में 'रेनेसाँ' समस्त मानवीय ज्ञान-संपदा, सर्जनात्मक कला-शक्तियों एवं बहुमुखी वैज्ञानिक उपलब्धियों का बीजवपन और संक्रान्तिकाल था। यह मध्य युग से आधुनिक काल में पदार्पण था। राष्ट्रीय नवजागरण और यूरोपीय रेनेसां के विविध आयामों की तुलनात्मक समीक्षा करते हुए हमने देखा कि इन दोनों की मूल चेतना और प्रवृत्तियाँ समान होने पर भी इनके ऐतिहासिक संदर्भों, दृष्टिकोण, प्रेरणास्रोत, आदर्शों एवं प्रकृति में कितनी मूलभूत

भिन्नता थी। राष्ट्रीय नवजागरण के विविध स्वदेशी-विदेशी स्रोतों के विशिष्ट अवदान और प्रेरक शक्तियों को भी हमने आँका है जिसमें इस तथ्य को भी व्याख्यायित किया गया है कि भारत में राष्ट्रीय-चेतना के अंकुरण एवं आधारभूत आर्थिक रूपांतरण के लिए ग्रामीण अर्थ-व्यवस्था का विनाश और अंग्रेजी राज की गुलामी की प्रक्रिया अनिवार्य नहीं थी। भारत में व्यापारिक पूँजीवादी भौतिक आधार का सूत्रपात मध्यकाल में ही हो चुका था। भारतीय नवजागरण पाश्चात्य शिक्षा, संस्कृति, धर्म और अंग्रेजी प्रशासन की उदारतापूर्ण देन न होकर उनके द्वारा खड़ी की गयी चुनौतियों का प्रत्युत्तर और इसी धरती की मिट्टी से उपजा सांस्कृतिक आंदोलन था।

पत्रकारिता की आधुनिक अवधारणा, व्यापक राष्ट्रीय उद्देश्यों, उच्च प्रतिमानों एवं राष्ट्रीय स्वरूप का आविर्भाव रेनेसां काल में हुआ था। आधुनिक पत्रकारिता केवल समाचारों का संकलन अथवा सरकारी प्रचार का माध्यम ही नहीं है, वह जनमत की संरक्षक, सर्जक और पथ-प्रदर्शक है। इसका वर्तमान परिदृश्य विविध दृश्य-श्रव्य-पाठ्य सामग्री है जिसका भव्य प्रस्तुतीकरण आज जनसंस्थान के उन्नत अंगों पत्र-पत्रिकाओं, विज्ञापन, रेडियो, चलचित्र और दूरदर्शन के द्वारा होता है। 19वीं शती के उत्तरार्द्ध के जन-जागरण में केवल पत्र-पत्रिकाओं और विज्ञापन ने ही अविस्मरणीय हिस्सेदारी निभायी थी, क्योंकि अन्य अंगों का तब तक आविष्कार नहीं हुआ था। हमने अपने अध्ययन में मुख्यतः हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं के संदर्भ-साधन द्वारा उत्तर 19वीं शती के पराधीन भारत में राष्ट्रीय अस्मिता, आधुनिक वैचारिक सांस्कृतिक मनोभूमि, वैज्ञानिक तर्क प्रज्ञा एवं आधुनिक हिन्दी साहित्य-भाषा को पल्लवन को मूलतः अभिचित्रित किया है। पत्रकारिता, इतिहास और साहित्य के अन्तःसम्बन्धों, परस्पर प्रतिबद्धता की तुलनात्मक समीक्षा करते हुए हमने देखा कि पत्र-पत्रिकाएँ सर्जनात्मक शाश्वत साहित्य, चिरंतन मूल्यों और जन-संवेदना को भी सशक्तता के साथ मूर्त्त करती है। 19वीं शती से ही हिन्दी के प्रख्यात साहित्य सर्जकों ने पकत्रारिता से किसी रूप में जुड़े रहकर उसको आधुनिक प्रौढ़ स्वरूप प्रदान किया है। संभवतः यही कारण है कि हिन्दी पत्रकारिता में साहित्यिक-रसात्मकता, इतिहास और अनुभूति का अद्‌भुत पुट विद्यमान है।

आधुनिक पत्रकारिता के उद्‌भव और विकास के अनेक सोपानों एवं प्रारम्भिक अंग्रेजी, उर्दू, मिशनरी और हिन्दी-पत्रकारिता का विस्तार से चित्रण करते हुए कुछ तथ्य स्वतः स्पष्ट हो जाते हैं कि सबसे पहले बंगाल में राजा राममोहन और अन्य सहयोगी समाज सुधारकों ने ईसाई धर्म प्रचारकों के हिन्दू-धर्म के प्रति आक्रामक रवैये, भारतीय समाज की रूढ़िवादिता तथा प्रेस की स्वाधीनता के हनन का मुँह तोड़ वैचारिक प्रतिकार किया तथा लोक मानस को आधुनिकता एवं वैज्ञानिक ज्ञान-विज्ञान से सम्बन्ध करने के लिए स्वदेशपरक दृष्टिकोण से अनेक देशी भाषाओं में पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित कीं। तत्कालीन उर्दू और मिशनरी पत्रकारिता राजकीय संरक्षण, प्रोत्साहन और रियायतें पाकर प्रगति की दौड़ में उपेक्षित हिन्दी पत्रकारिता से बहुत आगे निकल गयी

थी। हमने हिन्दी का प्रथम पत्र 'उदन्त मार्त्तण्ड' (30 मई 1826) को न मानकर पत्र 'गास्पल मैगजीन (1820) को माना है जिसके आठ पृष्ठ डा० जे० एच० आनंद के के पास सुरक्षित रखे हुए हैं।

हिन्दी पत्रकारिता के प्रारम्भिक चरण (1820-1850) के 30-32 सालों में केवल 10-12 पत्र-पत्रिकाएँ ही प्रकाशित हुई। मंद विकास गति होने के अनेक अवरोध के कारण रहे। हमने देखा कि नव-चेतना के अभाव में यद्यपि प्रारम्भिक पत्र-पत्रिकाएँ कथ्य-अभिव्यंजना, साहित्य और पत्रकारिता के उच्च प्रतिमानों अथवा राष्ट्रीय चेतना की दृष्टि से भी कोई विशिष्ट उपलब्धि प्राप्त करने में समर्थ नहीं हो सकी थीं, तथापि इनका महत्व हिन्दी-विरोधी परिवेश में हिन्दी पत्रकारिता की परंपरा को अक्षुण्ण रखने के कारण असंदिग्ध है।

1857 के स्वातंत्र्य-समर के दमन के पश्चात् लगभग 1870 से क्रमशः अनेक कारणों से राष्ट्रीय नवचेतना में तेजी से उभार के साथ राष्ट्रीय-पत्रकारिता का प्रस्फुटन हुआ। इससे पूर्व हिन्दी-उर्दू भाषाओं की पत्रकारिता द्विभाषी पत्रों के रूप में संयुक्त रूप से प्रकाशित हो रही थी। प्रस्तुत विवेच्य पत्रकारिता के विकास के संदर्भ में हम यह भी देख चुके हैं कि अंग्रेजों की 'फूट डालो राज करो' तथा हर स्तर पर विभेद नीति को बढ़ावा देने तथा 'बनारस अखबार' जैसे ब्रिटिश राज भक्त, उर्दूपरस्त पत्रों की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप हिन्दी-उर्दू पत्रकारिता में किस प्रकार अलगाववादी सांप्रदायिक नकारात्मक प्रवृत्ति, प्रतिद्वन्द्विता और विद्वेष के भाव पनपने लगे थे।

'रेनेसाँ काल' में राष्ट्रीय जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नवचेतना का शंखनाद फूंकने वाले राष्ट्र समर्पित पत्र और पत्रकारों, लेखकों का एक बुद्धिजीवी वर्ग हिन्दी के आकाश में नवीन चेतना के कलाधर की भाँति चमका।

भारतेन्दु और उनके युग के बहुमुखी प्रतिभा संपन्न साहित्य-सर्जकों ने जो समाजसेवी पत्रकार, समर्पित राजनीतिक कार्यकर्त्ता और प्रबुद्ध समाज-सुधारक भी थे उन्होंने स्वयं अपनी पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित करके सुषुप्त हिन्दी समाज को जगा दिया था और नव-शिक्षित वर्ग को हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र को अपनाने के लिए उत्प्रेरित किया। फलस्वरूप इस काल में लगभग 350 पत्र-पत्रिकाएँ प्रकाशित हुईं। बौद्धिक विश्लेषण करके हमने पाया है कि परिमाण या संख्या की दृष्टि से ही नहीं, गुणवत्ता और श्रेष्ठ प्रतिमानों की दृष्टि से भी इस युग की अधिकांश पत्र-पत्रिकाएँ गौरव की अधिकारिणी हैं। यद्यपि उनमें वर्तमान हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं के समान भव्य साज सज्जा, नयनाभिराम चित्रांकन, इन्द्रधनुषी विज्ञापनों की भरमार, हजारों-लाखों में प्रसार संख्या, व्यावसायिक अर्थ-निष्ठा एवं पद-यश-लिप्सा आदि का सर्वथा अभाव है तथापि इनकी निःस्वार्थ बौद्धिक साधना, उत्कृष्ट राष्ट्रीय चिंतन, मौलिक सर्जना के प्रमाण इनके प्रखर संपादकीय लेखन, क्रांतिकारी साहित्यिक विधाओं एवं राष्ट्राभिमान युक्त पत्रकारिता-सामग्री में मिल जाते हैं। सार रूप में हम कह सकते हैं कि भारतेन्दु युग के पत्र-संस्थान केवल समाचार-वितरण की एजेंसियाँ न होकर जनता के टूटे मनोबल,

स्खलित आस्था को जोड़ने वाले सेतु थे। विवेच्यकालीन पत्रकारिता ही आधुनिकता, राष्ट्रीयता और भारतीयता की वाहिका रही जिसका मूल ध्येय राष्ट्र-साहित्य-भाषा-पत्रकारिता के उच्च आदर्शों और स्वाधीनता के लिए जूझना था।

जागरणकाल की पत्रकारिता का कलेवर विविध सर्जनात्मक एवं ज्ञानात्मक सामग्री से आपूरित था। हिन्दी के आधुनिक गद्य, खड़ी बोली की राष्ट्रीय कविता और जनभाषा को साहित्यिक कलात्मक स्तर प्रदान करने में तत्कालीन पत्र और पत्रकारों के अविस्मरणीय प्रदेय पर दृष्टिपात करते हुए हमने देखा है कि भारतेन्दु युग में पत्रों के माध्यम से गद्य का एक स्वतन्त्र आत्म-निर्भर स्वरूप और आधुनिक विधागत मौलिक कृतित्व उभर कर सामने आया। जन-भाषा हिन्दी में सहज वेग एवं कलात्मक सौन्दर्य का विकास हुआ। गद्य सर्जनात्मक स्तर तक ऊपर उठा। भारतेन्दु युगीन पत्रकारों ने हिन्दी भाषा और साहित्य को पुराने संकीर्ण राज दरबारी परिवेश और ढर्रे से निकाल कर उसे नव-युग और नव-जीवन के साथ जोड़ा। इसी प्रसंग में हमने यह भी पाया है कि आधुनिक गद्य-वृत्तों का जन्म पश्चिमी साहित्य की देन के रूप में न होकर सामाजिक राष्ट्रीय उद्‌बोधन तथा पत्र-पत्रिकाओं के कलेवर की आपूर्ति के लिए हुआ था। उस काल के अधिकांश पत्रों के रचनात्मक साहित्य का लेखन किसी रूढ़ साहित्यिक विधा के रूप में न होकर राष्ट्रीय नव-जागृति के लिए पाठकों से विधारहित बातचीत के रूप में हुआ था। तत्कालीन नाटकों, उपन्यासों, निबन्धों आदि में समाज के दोहरे मूल्यों, पाश्चात्य शिक्षा की ध्वंसात्मक भूमिका और समाज में फैले भ्रष्टाचार को आदर्शोन्मुख अन्दाज से उठाया गया है। समालोचना, यात्रा-वृत्त, रिपोर्ताज, रेखाचित्र, कहानी का बनता-बिगड़ता प्रारम्भिक स्वरूप भी पत्रों की रचनात्मक सामग्री में देखा जा सकता है। तत्कालीन राष्ट्र भक्त कवियों की 1857 के स्वातंत्र्य समर के महान जननायको और जन-विद्रोह आदि की घटनाओं पर प्रतिक्रिया इतनी ठण्डी क्यों रही? उसमें छिपे मूल कारणों को भी उद्‌घाटित करने की चेष्टा की है। इस काल की खड़ी बोली की प्रारंभिक कविता अटपटी होने पर भी युग धर्म और राष्ट्रीय आह्वान में पूर्णतः सक्षम है जिससे कविता में एक नवोन्मेष की सूचना मिल जाती है।

निष्कर्ष रूप में हमने पाया है कि भारतेन्दु युग के पत्रकार मौलिक सर्जनाकार अधिक थे, शिल्पकार कम। उनका साहित्य कलात्मक विलास नहीं वरन् जीवन और राष्ट्रीय परिवेश की अनुभूति की उपज है जिसमें जीवन के सभी विकृत-सुन्दर पत्रों को समान रूप से उभारा गया है। उनमें विवेक और संस्कार, भावों और विचारों के द्वन्द्व के कारण सौन्दर्य बोध नहीं पनपने पाया है। उन्होंने सत्य, शिव में ही साहित्यिक सौन्दर्य की तलाश की है।

राष्ट्रीय कांग्रेस के आविर्भाव से पूर्व ही राष्ट्रीय स्तर की संस्था के समस्त कार्यों की संपूर्ति पत्रकारिता ने ही की थी। प्रारम्भ में हिन्दी पत्रकारिता के स्वर राज-भक्ति से ओत-प्रोत और ब्रिटिश शासन के प्रति विस्मय युक्त श्रद्धा से आपूरित दिखा-लायी देते हैं किन्तु इस अध्ययन में हमने पाया है कि यह राजभक्ति और देशभक्ति

का विरोधाभास उनकी परिवेशजन्य विवशता और व्यापक अंग्रेजी प्रचार तंत्र से उपजी भ्रमपूर्ण आशा की परिणति था। वे दमन-आंतक के कारण ऊपरी तौर पर ही 'राजभक्त' होने का स्वांग अवश्य करती थी किन्तु तत्कालीन राष्ट्रीय पत्र और पत्रकार पूर्णतः राष्ट्र के प्रति समर्पित थे, उनकी पत्रकारिता जनाधारित थी। वे सरकार के सामने धेनु की मुद्रा में खड़े रहने वाले राजभक्त पत्रकार कदापि नहीं थे। उनका उद्देश्य राष्ट्रीय मानसिकता का अंकुरण करना था।

तत्कालीन राष्ट्रीय अवधारणा का अनुशीलन करते हुए हमने देखा कि वह यूरोपीय रेनेसाँ और प्राचीन भारतीय राष्ट्रीयता से किस रूप में भिन्न थी। राजनीतिक चेतना के विकास के साथ तत्कालीन पत्रकारिता का स्वर भी प्रचंड रूप धारण करता गया था। उसने कहीं प्रच्छन्न रूप से राजभक्ति की आड़ में, कभी दुस्साहस दिखाते हुए निर्भीक रूप में अंग्रेजी औपनिवेशिक राज के ध्वंसात्मक प्रभावों तथा राष्ट्र घातक मूल शोषण तन्त्र पर प्रहार किया था। हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं ने मुगल शासन को अंग्रेजी शासन से हर स्तर पर श्रेष्ठ और लाभकारी बताते हुए अंग्रेजों की कूटनीतिक चालों, सुनियोजित प्रचार तंत्र तथा भारतीयों को सभ्य और उन्नत बनाने के मुखौटों को उघाड़कर रख दिया था। उन्होंने अंग्रेजों की न्याय व्यवस्था, रेल व्यवस्था तथा सिविल सर्विस आदि में व्याप्त रंग भेद नीति की खुल कर भर्त्सना की थी तथा स्वायत्त और प्रतिनिधि शासन के लिए नेतृ वर्ग को सहयोग प्रदान कर अभियान छेड़ दिया था। राष्ट्रीय कांग्रेस और गांधी के राजनीतिक मंच पर आने से बहुत पूर्व ही हिन्दी पत्रकारिता ने स्वदेशी आन्दोलन का सूत्रपात कर दिया था। उन्होंने बौद्धिक एवं मनोवैज्ञानिक तर्क प्रस्तुत कर स्वस्थ देशी परंपरा और भारतीयता का प्रचार किया। पत्रकारों का मुँह बन्द करने के लिए वर्नाक्यूलर प्रेस एक्ट पारित कर उनका दमन किया गया। पत्रकारों को कदम-कदम पर अनेक आर्थिक कष्टों, यातनाओं और पीड़ा को झेलना पड़ा। इस प्रकार भारतीय पत्रकारिता का इतिहास राष्ट्रीय नवजागरण का इतिहास बनकर एक-दूसरे के पूरक और सहोदर बन गये। हिन्दी पत्रकारिता के विदेशी सरकार के साथ बनते-बिगड़ते सम्बन्धों को भी हमने निरूपित किया है।

रेनेसाँ काल में हिन्दी पत्रकारिता ने सामाजिक, धार्मिक जीवन की विकृतियों और समाज को पंगु बना रहे कुसंस्कारों को अनावृत करके उनसे लोहा लिया था। उन्होंने समाज के मूल ढाँचे पर चोट करके आमूल सुधार की अलख जगायी तथा समाज में व्याप्त कुप्रथाओं, बाल विवाह, दहेज प्रथा, वेश्या वृत्ति, अन्धविश्वास, बेगार प्रथा, जाति प्रथा इत्यादि के विरुद्ध असंतोष और आक्रोश को उभार कर समाज शोधन और सांस्कृतिक आध्यात्मिक नवोत्थान के लिए उत्तेजित किया। हमने यह भी देखा है कि तत्कालीन नवजागरण में जीवन को अनेक दायरों और संकीर्ण कटघरों में बंद करके नहीं देखा गया है, उनके लिए जीवन एक अखण्ड सत्ता थी।

इस प्रकार हिन्दी पत्र-पत्रकारों की लड़ाई एक साहसी योद्धा के समान जीवन के सभी स्तरों पर समान रूप से चली थी। प्रायः सभी सामाजिक, धार्मिक, जातीय

संगठनों और संस्थाओं ने भारतीय नवजागरण में हाथ बँटाया। अपने-अपने धर्मों की रक्षा और प्रचार के लिए किये गये वैचारिक धर्म युद्धों ने संपूर्ण भारतीय समाज को जगा कर खड़ा कर दिया था। धर्म और समाज का युगीन आवश्यकताओं के अनुकूल सुधार और पुनर्व्याख्या द्वारा अभिनवीकरण करने की चेष्टा की गई।

जहाँ एक ओर हिन्दी पत्रकारिता राष्ट्रीय नवजागरण के लिए वैचारिक क्रांति की वाहिका रही वहीं पत्रकारिता को आधुनिक व्यक्तित्व, स्वरूप, उच्च चरित्र और गरिमा प्रदान करने का श्रेय राष्ट्रीय रेनेसाँ को दिया जा सकता है। रेनेसाँ ने पत्रकारिता में स्वस्थ साहसिक दृष्टिकोण, मानवतावादी चिन्तन, मिशनरी स्प्रिट, उच्च राष्ट्रीय आदर्श एवं आत्मगौरव के भाव भर दिये। उनकी हर भंगिमा भारतीयों के दर्द-पीड़ा, टूटते-जूझते भारतीय संघर्षों और महत्वाकांक्षा को उकेरती है। उनकी प्रगतिशीलता, यथार्थपरक दृष्टिकोण, राष्ट्रीय बोध और गत्यात्मकता राष्ट्रीय नवजागरण से प्रभावित बदलती मानसिकता को द्योतित करती है। जातीय, भाषा और जातीय चिन्तन को गौरवान्वित करके उसे सबल समर्थ रूप प्रदान करने का श्रेय राष्ट्रीय जागरण और पत्रकारिता को ही दिया जा सकता था। नवजागरण के माध्यम से पत्रकारिता में वैज्ञानिक तर्कशीलता, बौद्धिकता भारतीयता का समावेश हुआ। उनका कलात्मक साहस, भाषा-सामर्थ्य स्वाधीनता भी नवजागरण की उपज है।

राष्ट्रीय नवजागरण (रेनेसाँ) भारत में 19वीं शती के उत्तरार्द्ध से प्रारम्भ हुआ और बीसवीं शती के पाँचवें दशक तक उसकी तीव्र लहर भारतीय जन जीवन के प्रत्येक पहलू को स्पंदित करके उनमें राष्ट्राभिमान और राष्ट्रीय एकता का संचार करती रही। आज वर्तमान भारत पुनः लगभग उसी प्रकार के राष्ट्रीय प्रश्नों, उन्हीं समस्याओं और विषम परिवेश से जूझ रहा है जो उत्तर 19वीं शती के जागरण काल में था। पुनः राष्ट्रीय एकता और सद्भाव के लिए जन जागरण की एक दुर्दमनीय लहर की आवश्यकता का अनुभव किया जा रहा है। पत्रकारिता और साहित्य के क्षेत्र में भी राष्ट्र सेवा और निःस्वार्थ समर्पित निष्ठा का स्थान स्वार्थपरता और व्यावसायिक वृत्ति ने ले लिया है। भारतीय मनीषा की स्वतन्त्र चिंतन-मनन तथा विवेक की धार सांस्कृतिक-बौद्धिक गुलामी के कारण कुंद हो गयी है। मिशनरी स्प्रिट के बदले मशीनरी स्प्रिट प्रमुख हो गयी है। वर्तमान समस्याओं के समाधान के लिए रेनेसाँ युग के उन तेजस्वी पत्र और पत्र कारों से प्रेरणा शक्ति ग्रहण की जानी चाहिए जिन्होंने भारतीयों के आत्म गौरव और राष्ट्राभिमान की सुवास से भरकर उनकी आत्मा, मन-मस्तिष्क, भाषा-शैली, सभ्यता-संस्कृति का अभिनवीकरण किया था।